[redacted]

पो. दिनांकः ३० मार्च २०१९

[redacted]

वर्ष-१७ अंक-०५
२७ मई २०१९

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
एक प्रति-२०.०० रु.

ओ३म्

ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक रवि
मासिक

वर्ष 17 अंक–05

27 मई 2019
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गाँधी
कार्या. फोन : 0755 4220549

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन : 07324 226566

सह सम्पादक
श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता
एक प्रति – 20–00 रू.
वार्षिक – 200–00 रू.
आजीवन – 1000–00 रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	500 रू.
पूर्ण पृष्ठ (अन्दर)	400 रूं.
आधा पृष्ठ (अन्दर का)	250 रू.
चौथाई पृष्ठ	150 रू.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	**सम्पादकीय**	4
2.	पं. मोतीलाल नेहरू..........	8
3.	ओ3म् जपो.......... कविता	11
4.	वेद सुधा	12
5.	प्रलय की प्रतीक्षा.........कविता	14
6.	मनुष्यता की पहचान.........	16
7.	सच्चे गुरू की पहचान....बोधकथा	18
8.	ईश्वर अद्भुत कलाकार है...	20
9.	विशेष	23
10.	समाचार...	24–26

जून माह के पर्व त्यौहार एवं जयन्ती

0 महाराणा प्रताप जयंती	6
0 छत्रसाल जयंती	
0 महेश जयन्ती	11
0 कबीर जयन्ती	17
0 गुरू हरगोविन्द जयन्ती	18
0 वीरांगना दुर्गावती बलिदान दिवस	24

सम्पादकीय –

भविष्य से बेखबर सनातन धर्मी

जिसे खुद न हो होश संभलने का।
खुदा भी उस कौम की हिफाजत नहीं करता।।

उपरोक्त पंक्तियॉ किसी शायर की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सनातन धर्मियों के प्रति नितान्त सत्य सिद्ध हो रही हैं। मानव स्वभाव है वह अपने जीवन में किसी भी वस्तु का चयन करते समय प्राथमिकता उसी को देता है जो उसकी इच्छाओं, आवश्यकताओं के, विचारों के अनुकूल हो। दुनिया के तमाम लोग जो अपने मजहब को जीवन की प्राथमिकता देते हैं। इनका सोच मजहब के प्रचार–प्रसार के लिए है, ऐसी कौम निरन्तर अपना कद बढ़ाती रहती हैं। कुछ हजार वर्षों में प्रचलित विचारधाराएं आज सनातनधर्मियों से संख्या में कई गुना अधिक फैल चुकी हैं। इतना ही नहीं ऐसी विचारधाराओं के लिए भारतवर्ष के अतिरिक्त कई कई देश हैं, जहां उनकी विचारधारा को ही प्राथमिकता दी जाती है और वह उसी विचारधारा वाला देश कहलाता है। संसार में अनेक देश ऐसे हैं जहां बौद्ध, इस्लाम और ईसाईयत के प्रभाव में उन्हीं की विचारधारा के अनुरूप स्थापित हैं जिसके प्रशासन में, संचालन में उनकी साम्प्रदायिक विचारधारा को प्रमुखता दी गई है।

सृष्टि के प्रांरभ से ईश्वर प्रदत्त धर्म सनातन धर्म है और यह भी सत्य है कि धर्म केवल एक ही है जो सनातन है। पूर्व में इसी के अन्तर्गत समस्त विश्व था सभी सनातन धर्मके अनुयायी थे और जो सनातन धर्म से विमुख थे वे अधर्मी समाज व राष्ट्र के लिए नुकसानदायक थे। कालान्तर में साम्प्रदायिक विचारधाराओं का प्रादुर्भाव हुआ और धीरे–धीरे उन्होंने अपनी संख्या को बढ़ाकर संसार में अपना अस्तित्व बढ़ाने का प्रयास प्रारंभ किया। जितने भी सम्प्रदाय और विचार धाराएं सनातन धर्म से हटकर प्रचलित हैं उन सबका मूल सनातन धर्म ही था। बाद में उसी से कटकर उसी से निकल निकल कर सभी ने सनातन धर्म के समकक्ष अपने को स्थापित करने की निश्चित किया और करते जा रहे हैं, जिसमें उन्हें भीड़ जुटाने में सफलता भी मिली है।

वर्षों से अज्ञान और धर्म के मूल से दूर कपोल कल्पित बातों में उलझे हुए करोडों व्यक्ति धर्म से दूर मजहबी जुनून में अपनी संख्या बढ़ाकर धर्म के विरूद्ध मजहबी विचारधारा फैला रहे हैं। यह समस्त मानव जाति की चिन्ता का विषय है। सनातन धर्म के अतिरिंक्त धर्म के नाम पर प्रचलित सभी विचारधाराएँ अपने अस्तित्व को बढ़ाने में लगी हुई हैं जिसमें नैतिकता, संगठन, दया, सहानुभूति, परमार्थ, सत्याचरण जैसी प्रमुख आस्थाओं को विशेष महत्व नहीं है। परिणाम स्वरूप

विवाद, हिन्सा, दूरिया, भय, अविश्वास का वातावरण निरन्तर बढ़ते जा रहा है। यदि इस अव्यवस्था की आंधी को कोई रोक सकता है तो वह एक सच्चा सनातन धर्मी ही रोक सकता है। किसी अनैतिक और गलत कार्य को रोकने का साहस भी वही व्यक्ति कर सकता है जो स्वयं किसी अच्छी विचारधारा का प्रबल समर्थक हो, सक्षम हो, आत्म विश्वासी हो और दुष्परिणामों को समझकर उसका कट्टर विरोधी हों।

क्या इस प्रकार की भावना सनातनधर्मियों में है ? हॉ है तो सही, किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। अधिकांश सनातनधर्मी सदस्य अपनी और अपने परिवार की उन्नति को ही अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य व धर्म मान रहे हैं। इसलिए उन्हें संस्कृति और सनातन धर्म के प्रति कोई विशेष रूचि नहीं है। दूसरे वे हैं जो गुमराह होकर मजहब को भी धर्म मानकर यह भी ठीक है वह भी ठीक है सब एक है कि आस्था में जी रहे हैं। इस कारण सनातन धर्म या दूसरी विचारधारा को समान मानने से क्षति सनातन धर्मी और लाभ साम्प्रदायिक विचारधारा वाले उठा रहे हैं। तीसरे वे हैं जो पद और प्रतिष्ठा में अपने मूल सनातन धर्म की उपेक्षा करने वाले को भी अपना हितैषी और सहयोगी मानकर न्यूटल (तटस्थ) अर्थात न काहो से दोस्ती न बैर के सिद्धान्त पर चल रहे हैं। ऐसे लोग अपने पूर्वजों की उस महान नैतिक सम्पत्ति जिसके कारण यह देश कभी विश्व गुरू था, उसकी अव्हेलना कर रहे हैं। हमारे अनेक उन महापुरूषों के जिनके हम परिवार में चित्र लगाते है, पूजा करते जय बोलते किन्तु सनातन धर्म के लिए उनके द्वारा किए कार्यों और बलिदानों की उपेक्षा कर रहे हैं। इस प्रकार जानबूझकर भविष्य से आने वाले खतरों से हम अपने को दूर रख रहे हैं। उनके संबंध में कोई गंभीर चिन्तन नहीं है। सनातन धर्मियों में निरन्तर राजनीति, जाति, ईश्वर, धर्म, पूजा पद्धति व भाषा के कारण दूरियां बढ़ाने का प्रयास चल रहा है। किन्तु सनातनधर्मी इस षड़यन्त्र से बेखबर सो रहा है। **घर को आग लग रही है, घर के चिराग से....**यह पंक्तियां भी चरितार्थ हो रहीं हैं। तथाकथित कुछ सनातनधर्मी ही अपने निज स्वार्थ या सत्ता की मदहोशी में सनातनधर्मियों के लिए विपरीत विचार रखते हैं और उसका प्रचार प्रसार करते हैं। सनातन धर्म की रक्षा करने वालों को साम्प्रदायिक और जो साम्प्रदायिकता के नशे में सनातनधर्मियों को क्षति पहुंचा रहे हैं उनके प्रति मौन रहते हैं। इस प्रकार दोहरी क्षति सनातन धर्म के प्रति हो रही है। जिनका सहयोग करना चाहिए उनका विरोध हो रहा है और जिन विचार धाराओं से समाज संस्कृति और राष्ट्र असुरक्षित हो जावेगा उनसे निकटता बना रहे हैं। यह दुर्भाग्य है।

आज आवश्यकता है हर सनातन धर्मी मजहबी न बने किन्तु एक दृढ़ निष्ठावान सनातनधर्मी बन जाए, उन तमाम कारणों को दूर करें जिनसे सनातनधर्मी आपस में संगठित नहीं है.। राजनीति के नाम पर सनातन धर्म की बलि न चढ़ावें। यह वक्त की पुकार है। इसे नहीं समझा तो आने वाली पीढ़ियों के लिए हम कुंआ खोद रहे है। हमारा मौन रहना इसी बात का द्यौतक हो जाएगा। इसी सन्दर्भ में लिखी कविता पठनीय है।

सोते रहे गर यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा

– प्रकाश आर्य, महू

सोते रहे गर यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।
कली खिलने से पहले ही, पतझड़ कहर ढायेगा।
रहनुमा बने हुए है जो, आज वतन के,
वे ही दुश्मन बने हैं, इस चमन के।
माली के हाथ ही डाल पर, कैंची चल रही है।
हम समझ ही न पाये, कौन गलत, कौन सही है।।
डर है काला अतीत इस गफलत से, फिर दोहराएगा,
सोते रहे यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।1।।

सींचने का बहाना कर जो, मठ्ठा जड़ में डाल रहे,
ऐसे जहरीले नागों को, अपने ही घर में पाल रहे।
आक्रमण हो रहा संस्कृति पर, भंवर में उलझी नांव है,
कहां कहां लगावे मरहम, पूरे जिस्म पर तो घाव है।
अभी भी वक्त है, सभंल गए तो, वतन बच जायेगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जाएगा।।2।।

माली गद्दार विश्वास घाती, और बहरूपिये हैं,
विश्वास में ही विष के काण्ड, हजारों किए हैं।
पर यहां तो अफीम से भी गहरा नशा है,
राष्ट्र प्रेम बस, नारों में ही बसा है।
हम भले बन सोच रहे, जो हो रहा होने दो,
उजड़ जाए चमन, हमे तो बस सोने दो।
पर ध्यान रख ये आशिंया ही जल गया, तो तू भी नहीं बच पायेगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।3।।

स्वार्थ की मदिरा पीकर, ओ जिन्दा रहने वालों,
भूलकर अतीत पर, जरा नजर तो डालो।
जिनकी बदौलत आज आजाद कहलाते हो,
जय–जय कार से मन सबका बहलाते हो।

उन शहीदी परिवारों से पूछों, चमन कैसे सींचा था,
शहादत देकर भी, चेहरे पर तनाव न, तनिक दीखा था।

वह शहादत पुकार रही आज, लाज कौन बचायेगा,
राखी, मांग और सूनी गोद का, कर्ज कौन चुकायेगा।

तुम्हारी कृतघ्नता के गीत, भविष्य चीख–चीख कर सुनाएगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।4।।

डाल काट रहे वही, जिस पर तुम खुद बैठे हो,
अर्तनाद करती माता, कैसे उसके बेटे हो।
कर्तव्य विमुख बन गए क्यों, उष्णता रक्त में क्यों नहीं आती,
लुटते रहे खुद अपने हाथों, इतिहास इसका है साक्षी।
किन्तु हताश न हो, निराश न हो, वक्त पुरूषार्थ से फिर बदल जायेगा,
सूखे इस उपवन में फिर से, वही बहार लायेगा।
गर भूल गए कर्तव्यों को, तो भविष्य दुर्गम हो जाएगा।
सोते रहे यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।5।।

(इसी का परिणाम है कश्मीर, केरल, मिजोरम, आसाम, मेवात और कई सनातनधर्मियों से रिक्त हो गये स्थान)

सनातन धर्म के महान् नायक योगीराज कृष्ण ने अर्जुन को इसी एक ईश्वर का नाम स्मरण करने का उपदेश देते हुए कहा –

"ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्।"

एक ओ३म् परमात्मा के नाम का स्मरण करो।

– गीता 8/13

वह एक ओम परमात्मा ब्रह्म है उसे इसी नाम से स्मरण करो।

इसलिए हमें उस परमात्मा के मुख्य नाम ओ3म् का स्मरण करना चाहिए उसमें परमात्मा के सभी नामों का स्मरण स्वतः हो जाता है। यही ध्यान लगाने का सर्वोत्तम शब्द है। माण्डूक्योपनिषद् में भी ईश्वर का मुख्य नाम ओ3म् बताया है **"ओमित्येतदक्षरमिदं"** और कहा है **"एष सर्वेस्य भूतानाम् योनिः"** अक्षरयोंकारो वही परमात्मा सब प्राणियों के उत्पत्ति और विनाश का कारण है अर्थात् सब कुछ उसी में समाहित है।

महर्षि दयानन्द के जीवन से ....

स्वामीजी का सर्वांगीन कार्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूना, जो समाज सुधारकों की नगरी थी उसमें लगभग 15 व्याख्यान दिये। महाराष्ट्र की इस सांस्कृतिक नगरी में "सत्यशोधक समाज" और "प्रार्थना समाज" के सुधारवादी लोगों ने स्वामीजी की हाथी पर बिठाकर शोभायात्रा निकाली। वहीं पौराणिक कट्टरवादी पुरोहित वर्ग ने उनका सार्वजनिक अपमान भी करने का प्रयत्न किया। एक गधे पर किसी व्यक्ति को बिठाकर कर्मकाण्डियों ने उसको गर्दभानन्द नाम दिया और पुणे शहर में उसे घुमाया। दयानन्द इससे विचलित नहीं हुए और प्रश्नकर्ता को उत्तर देते हुए उन्होंने कहा – "असली दयानन्द तो यहाँ है। वह नकली दयानन्द है और नकली दयानन्द की यही दुर्दशा होती है। जो सच्चे होते हैं, उनको हाथी पर बिठाया जाता है और जो असत्य का प्रचार करते हैं उन्हें इस तरह गधे पर बिठाया जाता है।"

दिल्ली दरबार में एकता का प्रयत्न

सन् 1877 में भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड लिटन ने महारानी विक्टोरिया को भारत की राजराजेश्वरी घोषित किये जाने के उपलक्ष्य में दिल्ली में एक दरबार का आयोजन किया था। इस अवसर पर अनेक राजा, महाराजा दिल्ली दरबार के निमित्त इकट्ठे हुए थे। महर्षि जी ने उपस्थित सुधारकों और राजाओं के पास मतैव्य के लिए विज्ञापन पहुंचा दिये थे। इसके बाद अनेक रिफॉर्मर और राजा स्वामीजी से चर्चा के लिए उपस्थित हुए, जिनमें महाराजा जींद, सुधारकों में मुंशी कन्हैयालाल, अलखधारी, बाबू नवीनचन्द्र राय, बाबू केशवचन्द्र सेन, मुंशी इन्द्रमणि, सर सय्यद अहमद खॉ तथा बाबू हरिशचन्द्र चिन्तामणि आदि थे। स्वामीजी ने सभी से अपील की कि हम सब एक रीति नीति और एक मत से देश का सुधार करें जिससे कि देश बलशाली हो। लेकिन किन्हीं कारणों से सबकी एक राय न हो सकी। कोई भी नेता अपनी मान्यताओं को छोड़ने के लिए तैयार न था। स्वामी जी का इरादा नेक था लेकिन इस अनुभव के आधार पर कि अशिक्षित लोग अनेक कारणों से इकट्ठे हो सकते हैं, लेकिन बुद्धिमान लोग अपनी अहंमन्यता के कारण कभी एकमत अथवा इकट्ठा नहीं हो सकते। इस अनुभव से एक न हो सके।

आर्य समाज की स्थापना एवं डॉ. रहीम खॉ की कोठी पर व्याख्यान

सन् 1869 में स्वामी दयानन्द कानपुर से होते हुए काशी पहुँचे। वाराणसी यह धर्म की नगरी है यहाँ के पौराणिक विद्वानों को यह अवगत कराया जाए कि वेदों में केवल अव्यक्त निराकार परमेश्वर की उपासना का उल्लेख है। यह मूर्तिपूजा तथा ईश्वर के अवतार की कल्पना साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व लिखे गये पुराणों की

देन है, उससे पूर्व इसका वैदिक ग्रंथों में पूर्णतः अभाव है, यह जतलाना महर्षि को बहुत आवश्यक लगा। वे रामनगर से 21 सितम्बर 1869 को काशी पहुँचे। वहाँ उन्होंने अनेक विज्ञापन बंटवाये तथा विद्वानों को वेदों में मूर्तिपूजा सिद्ध करने हेतु चुनौती दी। काशी नरेश महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह जी की उपस्थिति में लगभग 41 पौराणिक आचार्यों के साथ दिनांक 16 नवम्बर सन् 1869 को यह शास्त्रार्थ हुआ। इसमें स्वामी दयानन्द के प्रतिपक्षी विद्वान स्वामी विशुद्धानन्द, पं. बालशास्त्री, पं. ताराचरण तर्करत्न आदि दिग्गज विद्वान प्रमुख थे। उपर्युक्त सारे विद्वान मिलकर भी वेदों में मूर्तिपूजा से सम्बन्धित एक भी मन्त्र न दिखला सके। स्वामी दयानन्द की इस शास्त्रार्थ में पूर्णतः विजय हुई। इस विजय से स्वामीजी की दिग्दिगन्त प्रसिद्धि हुई जिसके कारण उन्हें चारों दिशाओं से वेदों पर व्याख्यान देने के लिए निमन्त्रण आने लगे।

क्रमशः..............

धैर्य

धैर्य के नेत्रों से व्यक्ति जिस महान संकट की ओर देखें, रही धूम्र के बादलों की भांति क्षण में अदृश्य हो जाता है। – **बीरजी**

प्रकृति के चरण चिन्ह पर चलो। उसका रहस्य है धैर्य

– **इमर्सन**

धैर्य और परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं जो शक्ति और शीघ्रता से कभी नहीं। – **ला फाण्टेन**

वे कितने निर्धन हैं जिनके पास धैर्य नहीं है क्या आज तक कोई जख्म बिना धैर्य के ठीक हुआ है। – **शेक्सपियर**

धैर्य आशा करने की कला है। – **वावे नार्गी**

पं. मोतीलाल नेहरू, गायत्री मन्त्र और महर्षि दयानन्द

– पं. मनुदेव अभय "विद्यावचस्पति"

गायत्री मन्त्र को महामन्त्र कहा जाता है, परमात्मा के स्वरूप को दर्शाते हुए इसमें उत्तम बुद्धि की कामना की गई है। सबसें श्रेष्ठ व बड़ा बल बुद्धिबल होता है, इसीलिए इस मन्त्र को महामन्त्र कहा जाता है।

महर्षि दयानन्द के द्वारा सर्वप्रथम इस मन्त्र को जातिवर्ग के भेदभाव से हटकर प्राणीमात्र को इसे सुनने, बोलने का अधिकार प्रदान कर एक महान कार्य किया। इसके पूर्व गायत्री मन्त्र जिसे गुरू मन्त्र कहा जाता था, जो सुनने व बोलने का अधिकार एक वर्ग तक सीमित था।

दिवंगत पं. मनुदेव अभय "विद्यावाचस्पति" द्वारा पंडित मोतीलाल नेहरू व गायत्री मन्त्र के सन्दर्भ में लिखा गया लेख प्रस्तुत है।

महर्षि दयानन्द ने गायत्री मन्त्र सबको सिखाया करते थे। संस्कारविधि में महर्षि दयानन्द लिखते हैं – सन्यस्त होने के पश्चात स्वाध्याय निरन्तर होता रहना चाहिए। ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि में प्रमाद न हो तथा स्वाध्याय में अनाध्याय न हो। इन समस्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि महर्षि दयानन्द और उनके गुरू विरजानन्द गायत्री मन्त्र पर अगाध श्रद्धा रख सबको गायत्री मन्त्र का जाप करने का उपदेश दिया करते थे। उनके इस कार्य का सटीक उदाहरण इस प्रकार है –

जिन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल कांगड़ी के सर्वेसर्वा थे, तब एक बार गुरूकुल के वार्षिकोत्सव पर उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू के पिता श्री पंडित मोतीलाल नेहरू को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया। पं. मोतीलालजी नेहरू ने अपनी स्वीकृति दे दी तथा निश्चित समय पर गुरूकुल पधार गये। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार उन्हें मंच पर व्याख्यान के लिए आहूत किया गया। उन दिनों गुरूकुल कांगड़ी का उत्सव जन आकर्षण का केन्द्र होता था। सभा में बहुत बड़ी संख्या श्रोताओं की थी। माननीय प्रमुख वक्ता पं. मोतीलाल नेहरू ने मंच पर खड़े होकर सर्वप्रथम गायत्री मन्त्र का विधिवत उच्चारण किया, तत्पश्चात उन्होंने अपना सारगर्भित भाषण दिया। हम यहां उनके भाषण का उल्लेख या समीक्षा करना नहीं चाहते, अपितु उन्होंने गुरूकुल मन्त्र से गायत्री मन्त्र के शिक्षक गुरू महर्षि दयानन्द के संबंध में जो सत्य घटना सुनाई, उससे उपस्थित सभी श्रोतागण भाव–विभोर हो उठे।

पं. मोतीलाल नेहरू ने एक अति महत्वपूर्ण रहस्य का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा –

. यह बात उन दिनों की है, जब महर्षि दयानन्द आगरा में एक महाविद्यालय के निकट प्रांगण में स्थित बगीचे में ठहरे हुए थे। हम 15–20 युवक प्रतिदिन दोपहर पश्चात फुटबॉल खेलने जाया करते थे। सायंकाल खेल समाप्ति के पश्चात एक दिन मैं अपने कुछ साथियों के साथ बगीचे में ठहरे, सन्त (महर्षि दयानन्द) की कुटिया चला गया और श्रद्धा सहित प्रणाम कर सामने बैठ गया। हमारे आगमन की सूचना पाकर स्वामी जी भी बाहर रखे तख्त पर आकर विराजमान हो गये। हम सब लोगों ने उनसे कुछ उपदेश देनें की प्रार्थना की। उन्होंने कहा – मैं उपदेश देने के पूर्व आप लोगों से कुछ चर्चा करना चाहता हूं। युवकों के समूह में मैं ही सबेसे आगे बैठा था। स्वामीजी ने मेरा नाम, धाम और काम पूछा। मैंने सब कुछ सही–सही बता दिया। उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा –

युवक तुम ब्राह्मण बालक प्रतीत होते हो ?

मैंने कहा – हां स्वामी जी, मैं कश्मीरी ब्राह्मण हूं और यहां पढ़ने आया हूं।

स्वामी जी ने प्रतिप्रश्न किया – ब्राह्मण बालक होने के कारण क्या तुम्हें 'गायत्री मन्त्र' याद है ?

यह प्रश्न सुनकर मैं निरूत्तर हो गया। यद्यपि मेरा पूर्व में यज्ञोपवीत संस्कार हो चुका था और पुरोहित जी ने सम्भवतः गायत्री मन्त्र उच्चारित भी कराया था। किन्तु न तो मुझे याद रहा और न पुरोहितजी ने इसके विषय में कभी मुझसे पूछा।

स्वामीजी से नम्रमापूर्वक सिर झुकाते हुए शर्मीले ढ़ंग से कह दिया – नहीं, स्वामी जी मुझे गायत्री मन्त्र नहीं आता है। मैं पूरी तरह भूल गया हूं।

पूजनीय स्वामीजी यह सुनकर मुस्करा दिये। उन्होंने एकबार हम सब युवकों को दृष्टि भर कर देखा और फिर सोचा। उन्होंने मुझसे पूछा – क्या तुम गायत्री मन्त्र सीखना चाहते हो ? मैंने तत्काल उत्तर दिया हां, स्वामीजी महाराज, मुझे गायत्री मन्त्र की दीक्षा देने की कृपा करें।

पं. मोतीलाल नेहरू यह कहते हुए श्रद्धावश थोड़े भावुक हो उठे। श्रद्धालु की भावना का सत्कार करते हुए उन्होंने आगे कहना शुरू किया। इसके पश्चात ऋषिवर दयानन्द ने मुझे पद्मासन लगा कर बैठने के लिए कहा। में तत्काल उचित आसन लगा कर उनके सम्मुख बैठ गया। स्वामीजी के मुख मण्डल का इतना तेज था कि उनसे ऑख से ऑख मिलाकर बैठना अति कठिन था। फिर उन्होंने मुझे नमस्ते की मुद्रा में नेत्र बन्द कर, दोनों हाथ जोड़कर हृदय के निकट लाने के लिए कहा। मेरे द्वारा यह सब करने के पश्चात ऋषि ने गायत्री मन्त्र धीरे–धीरे बोलकर उसे दोहराने के लिए कहा। मैंने वैसे ही किया। उन्होंने मुझे गायत्री मन्त्र के अर्थ को भी समझाया। मुझे स्मरण है मैं स्वामीजी के निकट लगातार 3–4 दिन तक आता रहा और उन्हें मौखिक रूप से गायत्री मन्त्र सुनाता रहा। मेरे इस कम का मेरे साथियों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। फिर एक दिन एकाएक स्वामीजी कहीं अन्य नगर हेतु प्रस्थान कर गये। इसलिए मैं महर्षि दयानन्द को अपना दीक्षा गुरू मानता हूं।

महर्षि दयानन्द और गायत्री मन्त्र की इस रहस्यपूर्ण बातों को सुनकर मंच पर उपस्थित सब विद्वान तथा विशाल जनसमुदाय के लोग जरा जोश में आये और उन सभी ने मिलकर महर्षि दयानन्द की जय का उद्घोष किया। इस उद्घोष लगाने वालों में **पं. मोतीलाल नेहरू स्वयं भी थे।**

इस प्रकार महर्षि दयानन्द, गायत्री मन्त्र को सदैव अति महत्व दिया करते थे। किन्तु उसके चमत्कारवाद तथा किराये से जप अनुष्ठान कराये जाने का सदैव विरोध किया करते थे। उन्होंने अपने समस्त ग्रंथों में यन्त्र–तन्त्र प्रसंगानुसार गायत्री मन्त्र की व्याख्या की है। इन्हीं भावनाओं के अनुरूप आर्य समाज गायत्री मन्त्र को स्वीकार करता है, जो कि स्तुत्य है।

वेदामृत अथर्ववेद की सूक्तियाँ

1. **तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।**
   उस सबसे महान प्रभु के लिए नमस्कार हो।

2. **तस्य ते भक्तिवांसः स्याम।**
   हे प्रभो ! हम तेरे सच्चे भक्त बनें।

3. **स नः पर्षदति द्विषः।**
   ईश्वर हमें द्वेष–भावों वा शत्रुओं से अलग रखे।

4. **स एष एक वृदेक एव।**
   वह ईश्वर निश्चय से एक ही है।

5. **संश्रुतेन गमेमहि।**
   हम वेद की आज्ञा के अनुसार चलने वाले हों।

6. **मा श्रुतेन विराधिषि।**
   मैं कभी वेद–शास्त्र से अलग न होऊं, उसके विपरीत न चलूं।

7. **स नो मुंचत्वहंसः।**
   वह प्रभु हमें पाप से छुड़ा देवे।

8. **तमेव विद्वान न विभाय मृत्यांः।**
   आत्मा, वा परमात्मा को जानकर मनुष्य मौत से नहीं डरता।

ओउम् जपो

ओउम् जपो ओ मानवमन में भवसागर तर जाओगे,
परमेश्वर से प्रीति निभाओ जो चाहो कर पाओगे।

झूठा है संसार सकल यह ध्येय यही जो हो अपना,
परमेश्वर को पा जाने पर यह ही बन जाता सपना।
सबसे सद्व्यवहार करोगे स्नेह सुधा सरसाओगे।।
ओउम् जपो............

नन्हीं मानवता बाला को ऊँगली थमा चलाओ तुम,
दीन–हीन, पिछड़े पतितों को देकर साथ निभाओ तुम।
जगत्पिता की सकल सृष्टि में विश्वबन्ध बन जाओगे।।
ओउम् जपो............

सबमें है अनुराग चिरन्तन सारी सृष्टि वतन किसका,
तन किसका, यह धन किसका है, करे मनन यह मन किसका ?
जग के जीवन धन को जानो मुक्ति परम धन पाओगे।।
ओउम् जपो..............

जब–जब जीवन ज्योति जले आलोकित कोना–कोना हो,
व्याकुल विश्व सुपथ पा जावे कभी न तन में खोना हो।
मंगलमय हो पल–पल पावन जीवन पथ पर जाओगे।।
ओउम् जपो...............

यज्ञ करो, जल वृष्टि करो शुभ सृष्टि करो जग जीवन में,
धर्म धरो शुभ कर्म करो वेदों का मर्म धरो मन में।
ब्रह्म शान्ति सर्वम् शान्ति हो परम लक्ष्य प्रभ [illegible]गाओगे।।
ओउम् जपो........ ... .

परमेश्वर से प्रीति निभाओ जो चाहो कर पाओगे।
ओउम् जपो.....................

रमेशचन्द्र चौहान
262, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर

"वेद सुधा"

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

यजुर्वेद अध्याय 16 में 'रूद्र' शब्द को विस्तारपूर्वक समझाया गया है। 'रूद्रदेव' के विभिन्न रूपों का वर्णन है उन्हीं में से यहां कुछ अंश प्रस्तुत किया जाता है। रूद्र अनेक हैं यह द्यौ अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी पर विद्यमान हैं यजुर्वेद का यह अध्याय रूद्र अध्याय कहलाता है।

"असंख्याता सहस्त्राणि ये रूद्राऽधि भूम्याम्।" यजु. 16/54

"अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽधि" यजु. 16/55

इन रूद्रो के दो रूप हैं – 1. इनका जो कल्याणकारी रूप है, वह शिव कहलाता है। 2. और यही विनाशकारी रूप में रूद्र बन जाते हैं। इस त्रिगुणात्मक प्रकृति से उत्पन्न अर्थात इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ शिव और रूद्र है। सृष्टि रचयिता ईश्वर के भी यह नाम हैं किन्तु प्राकृतिक पदार्थों के भी है। जब मनुष्य सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ को ज्ञानपूर्वक समुचित रूप से उपयोग में लेता है तो वह रूप शिव हो जाता है, उसके लिए कल्याणकारी हो जाता है। किन्तु जब मनुष्य अज्ञान, अविद्या में फंसकर आसक्ति पूर्वक अनुचित अर्थात दुरूपयोग करता है तब वही पदार्थ रूद्र रूप से उसके लिए विनाशकारी हो जाता है।

ओ3म् नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

– यजुर्वेद 19/1

अर्थ – हे शत्रुओं को रूलाने वाले, रोगों को नष्ट करने वाले, दुर्गुणों, पापवृत्तियों को भस्म करने वाले प्रभो। आपको हमारा नमस्कार हो।

जैसे – पहले कहा है कि रूद्र असंख्य हैं ईश्वर, राजा, वायु, औषधि, वृक्ष, वैद्य, ऋषि, अर्थात् वैज्ञानिक आदि मन्त्र में असंख्यों पदार्थों का नाम रूद्र बताया है।

यहां पर केवल हम इस सर्वनियन्ता सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही ग्रहण करते हैं जब हम कल्याण पथ पर चलते हुए आत्म चिन्तन करते हैं, प्रभु का ध्यान करते हैं। उस समय हमारे अन्दर जो उत्साह होता है, जो साहस की अनुभूति होती है तथा जो शक्ति मिलती है। वह ईश्वर की 'शिव' रूप शक्ति है उसी के माध्यम से मनुष्य मोक्ष मार्ग में गमन करता हुआ यात्रा पूरी कर पाता है अर्थात् शिवलोक (मुक्ति) में पहुंच जाता है।

और जब व्यक्ति रोग, शोक व्यसनों तथा वासना, काम, क्रोध आदि शत्रुओं के बीच घिर जाता है, जब मुसीबतों के समुद्र में डूबने लगता है। ऐसी स्थिति में सगे संबंधी, रिश्तेदार व सभी मित्र आदि जब मुंह मोड़ लेते हैं तब व्यक्ति कातर

दृष्टि से प्रभु की ओर निहारता है, ध्यान करता है। इस समय जो वैराग्य होता है विषयों के प्रति अनासक्ति हो जाती है, व्यसनों, दुर्गुणों का नाश हो जाता है। यह ईश्वरीय 'रूद्र' शक्ति के माध्यम से होता है और रूद्र शक्ति की सहायता से मनुष्य सब प्रकार की पाप वृत्तियों पर विजय पाकर विजेता बन जाता है। अपनी दुर्बलताओं का नाश करके आत्मबल प्राप्त कर लेता है। तब उस प्रभु 'रूद्र' की सहायता और सुरक्षा में चक्रवर्ती सम्राट के समान व्यक्ति स्वाभिमान से प्रकाशमान हो जाता है। कोई भी आसुरी शक्ति तिरछी नजर से देखने का साहस नहीं कर सकती। इसलिए हम सब प्रभु का ही आश्रय लेवें।

सुरेशचन्द्र शास्त्री
उपदेशक
म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

गो मूत्र के सरलतम घरेलु औषधीय उपयोग

प्रतिदिन 50 मि.ली. भारतीय गाय का मूत्र सूती कपड़े की आठ परत कर छानकर प्रातः खाली पेट पियें। इस गोमूत्र के सेवन से एक घण्टे पहले और एक घण्टे बाद में कुछ खायें–पियें नहीं। इस प्रकार देशी गाय का मूत्र सेवन करने से पाईल्स, लकवा (पक्षघात), पथरी (मूत्र पित्त), दमा, सफेद दाग, टॉसिल्स, हार्ट अटैक (कोलेस्ट्रॉल), श्वेत प्रदर, अनियमित माहवारी, गठिया, डायबिटीज (मधुमेह), किडनी के रोग, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), सिरदर्द, टी. बी., कैंसर आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

जलोदर : गोमूत्र 50 मिली और आधा ग्राम हरड़ (एरंड, तेल में भुनी हुई) रात्रि को गो दुग्ध से लेने से बवासीर रोग नष्ट हो जाता है।

पाण्डु (कामला में) : गोमूत्र 50 मिली. पुनर्नवा मूल का क्वाथ 100 मिली. दोनों मिलाकर प्रातः–सायं लें। शीघ्र लाभ होगा।

जुकाम में : गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन पान करने से एवं गापालनस्य लेने से पुराना जुकाम ठीक हो जाता है।

उदरकृमि : गोमूत्र 50 मिली. 1 ग्राम अजवाइन चूर्ण के साथ प्रातःसायं सेवन करने से एक सप्ताह में कृमि नष्ट हो जाते हैं। ,

संधिवात में : (जोड़ों का दर्द व गठिया) महारास्नादि के क्वाथ के साथ गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है।

मनुष्यता की पहचान "परमार्थ"

परमात्मा ने संसार के प्रत्येक प्राणी को जन्म के साथ ही बुद्धि भी प्रदान की है। किसी भी प्राणी के लिए यह भी नहीं कहा जा सकता कि अमुक प्राणी में बुद्धि नहीं है। सामान्यतः हम यह कह देते हैं कि जानवर है इसमें बुद्धि नहीं है। ऐसा कहने का तात्पर्य मानना कि इसमें अकल है ही नहीं अनुचित है। बुद्धि नहीं होती तो गाय, भैंस, पशु–पक्षी अपना जीवन कैसे जीते ? जीवन जीने के लिए जो परिश्रम व प्रयास मनुष्य करता है वह सब पशु–पक्षी, जलचर भी करते है।

खाना, पीना, सोना, परिवार बढ़ाना, प्रयास करना, भयभित होना, सुख प्राप्ति के प्रयास करना यह सब गुण संसार के प्रत्येक प्राणी में पाये जाते है। चाहे वह मनुष्य हो, चौपाया हो, पक्षी हो या जल में रहने वाले प्राणी जीव–जन्तु हो।

बुद्धि के बिना जीवन की यह सब प्रकियाऐं करना असंभव है। जब सभी प्राणियों में बुद्धि है तो फिर इन सबमें ऊचा स्थान मनुष्य को क्यों दिया ? इस पर सोचना जरूरी है। कार्य तो सभी प्राणी करते हैं, परन्तु उनके कार्य करने का ढंग अलग है। कार्य करने की प्रेरणा बुद्धि देती है, बुद्धि की क्षमता और उसका सोच ही कार्य का परिणाम है।

सामान्य बुद्धि भौतिक सुख साधन को प्राप्त करने का निर्देश देती है। विशिष्ट सद्‌बुद्धि शरीर व भौतिक साधनों से उपर उठकर आगामी जीवन के सम्बन्ध में भी सोचती है। यदि जीवन की स्थिति में शारीरिक या भौतिक सुख सुविधाओं तक ही रह गए तो फिर पशु और मनुष्य का अन्तर नहीं रह जाता है।

पशु–पक्षी अपनी योग्यता व सीमा व उन्हें उपलब्ध साधनों के अनुसार अपना खाना–पीना रहना करते हैं, और मनुष्य भी यही करता है पर उसका स्तर, उसकी क्वालिटी अलग होती है।

पांच सितारा होटल में जाकर आदमी भूख मिटाने के साथ–साथ तरह–तरह के व्यंजनों का स्वाद लेकर किसी बढ़िया जगह बैठने की व्यवस्था वातानुकूलित कक्ष में बैठकर सुख प्राप्त करता है। वहीं पशु–पक्षी अपनी भूख साधारण रूप में जो, जहां, जैसा, उपलब्ध हो गया उस रूप में मिटाते हैं।

पक्षी अपने रहने का घोंसला अपनी अकल व सामर्थ्य के अनुसार बनाकर परिवार के साथ रह लेते हैं। मनुष्य अपने रहने के लिए आलीशान इमारत बनाकर रहता है। पक्षी अपनी यात्रा उड़कर और जलचर पानी में तैरकर करते हैं। मनुष्य इसके लिए पानी का जहाज, स्टीमर, नाव और वायुयान का उपयोग करता है।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि आवश्यकताऐं दोनो की समान हैं, दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो रही है। इनमें कोई अन्तर यदि है तो केवल साधनो का।

बुद्धि ने ही मनुष्य को सब प्राणियों में सर्वोच्च स्थान दिलवाया हैं। इसीलिए परमात्मा से प्रार्थना करने में सद्‌बुद्धि की कामना करते है। गायत्री मंत्र को महामंत्र कहते है। इस मंत्र में ईश्वर से भक्त बुद्धि को सत्य मार्ग पर ले जाने की प्रार्थना

करता है। सत्य मार्ग ही धर्म मार्ग है अर्थात जो जैसा हो वैसा ही समझना, मानना, आचरण करना सत्य मार्ग हैं, और यही धर्म हैं।

मनुष्य धर्म का पालन जो करते है वे ही सत्य पथ के अनुगामी है। जिनका आचरण सत्य से मंडित है वे ही मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं, अन्यथा शरीर मनुष्य का पाकर भी जिनका आचरण पशु–पक्षियों जैसा है, वे नकली कागजी फूल के समान है, जो दिखते तो फूल के समान है, परन्तु उनमें सुगन्ध नहीं होती हैं।

मानव की सार्थकता के लिए हमारी कार्यशैली की ओर थोड़ा विचार करना होगा। कर्म को तीन भागों में विभाजित करते हैं:–

पहला है **स्वार्थ** – जो कर्म प्राणी अपने निज लाभ के लिए करता है वह स्वार्थ कहलाता है।

कर्म का यह गुण पशु, पक्षी, जलचर और मनुष्य में समान रूप से पाए जाते है। इसमें किया गया प्रयास अपने तक सीमित रहता है। जीवन रक्षक सभी साधन भी इसी के अन्तर्गत आते है।

दूसरा है **पुरूषार्थ** – जब व्यक्ति अपने साथ ही अपने परिवार के लिए जो कर्म करता है वह पुरूषार्थ कहलाता है।

प्रायः यह कर्म भी सभी प्राणियों में पाए जाते हैं। मनुष्य की तरह पशु भी बाल्याकाल में अपने बच्चों की सुरक्षा उनको खिलाने, पिलाने दूसरों के आक्रमण से बचाने और अपना भोजन कैसे प्राप्त करना यह बताने के लिए पूर्ण प्रयत्न करते हैं। इस लिए कर्म का यह भाग भी सभी प्राणियों की सामान्य प्रकिया हैं।

तीसरा **परमार्थ** – परमार्थ वह कर्म है जिसमें कार्य करने वाला अपने लिए या अपने परिवार के लिए कोई कार्य नहीं करता है। उसके द्वारा किए जाने वाले कर्म में दूसरों को सुख, सुविधा पहुंचाना उसका उद्देश्य रहता है। ऐसा कर्म जिसके करने में निज स्वार्थ का अभाव हो जो पूर्ण रूप से जो दूसरों के हित के लिए भलाई के लिए है, यही परमार्थ कहलाता है।

कर्म का यह स्वरूप पशु–पक्षी या अन्य किसी प्राणी में नहीं पाया जाता है यह केवल मानव का ही गुण हो सकता है। इस गुण को धारण करना ही धर्म है। सन्त तुलसीदास जी की ये पंक्तियां **"परहित सरस धरम नहीं भाई"** परोपकार को धर्म बताती है।

समाज में रहकर समाज के लिए जो सोचते हैं, जिनके मन में परमार्थ की भावना है, परोपकार करके जीवन का जो सुख भोगते हैं, वे ही मनुष्य कहलाने के अधिकारी है। अन्यथा पहला व दूसरा अपने व अपने परिवार के लिए कर्म तो सभी प्राणियों में भी पाया जाता है। इन कर्मों को ही जीवन में महत्व दिया तो अपने को मनुष्य कहलाना एक धोखा है। मनुष्य का अर्थ तो कर्म के तीसरे भाग अर्थात परमार्थ को अपनाने से ही है। परमार्थ भावना से ही परिवार, समाज व राष्ट्र तथा विश्व सुखी रह सकता है। **सर्वे भवन्तु सुखिनः** इसी से संभव है। इसलिए सही अर्थो में मनुष्य जीवन की पहचान यही परमार्थ है।

– प्रकाश आर्य, महू

बोध कथा –

सच्चे गुरू की पहचान

भक्त दादू महाराज एक नगर के बाहर रहते थे। भक्ति से भरे गीत गाते। कोई आ जाय तो उसे भक्ति का उपदेश देते। स्थान–स्थान पर उनकी प्रसिद्धि होने लगीं, शहर में भी पहुंची। शहर के कोतवाल भक्ति की बातों में कुछ–कुछ रूचि रखते थे। घोड़े पर बैठे, शहर से चल पड़े कि दादू महाराज के दर्शन कर आयें, उनसे भक्ति का अमृत ले आये। परन्तु भक्ति में रूचि रखते हुए भी थे तो वे कोतवाल हो। शहर से बाहर जंगल में पहुंचे। दूर तक चले गये। कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। तभी एक व्यक्ति दिखाई दिया।वह मार्गमें लगी कांटेंदार झाड़ियों को काटकर सड़क साफ कर रहा था। कोतवाल ने रोब से पूछा – "ए ! तू जानता है कि महात्मा दादू कहां रहते हैं ?"

वह व्यक्ति कार्य में मस्त था, बोला नहीं। कोतवाल क्रुद्ध हो गए। गाली देते हुए बोले – मैं तेरे बाप का नौकर नहीं। शहर का कोतवाल हूं। जल्दी बोल।

उस व्यक्ति ने अबकी बार सुना, आश्चर्य से कोतवाल की ओर देखा, धीरे से मुस्करा दिया। कोतवाल ने समझा कि यह व्यक्ति ठट्टा कर रहा है। जिस चाबुक से घोड़े को चला रहे थे, उसी से उस व्यक्ति को पीट डाला। वह व्यक्ति चाबुक खाता रहा, फिर भी मुस्कुराता रहा। कोतवाल ने उसे जोर से धक्का दिया। वह व्यक्ति पत्थर पर गिरा। उसके सिर से रक्त बहने लगा। कोतवाल जल्दी में थे। उसे वैसे ही छोड़कर आगे चल दिये। कुछ दूरी पर जाकर एक और व्यक्ति दूसरी ओर जाता हुआ मिला। उससे बोले – "दादू महाराज कहां मिलेगें ? तू जानता है?"

उस व्यक्ति ने कहा – "दादू महाराज तो इसी मार्ग में थे। अभी कुछ देर पूर्व मैं उन्हें देखकर आया हूँ। वे मार्ग में लगी कॉटेदार झाड़ियों को काट रहे थे। क्या आपने उन्हें नहीं देखा ?"

कोतवाल ने आश्चर्य से कहा – वे दादू थे ?

पथिक ने कहा – हॉ।

कोतवाल घोड़े को मोड़कर दौड़ाते हुए वापस आये। देखा कि दादू ने अपने सिर पर पट्टी बॉध ली है। वैसे ही झॉड़ियां काट रहे थे। कोतवाल शीघ्रता के साथ घोड़े से उतरे। दादू के चरणों में गिर पड़े। रोते हुए बोले – क्षमा कर दो महात्मन्। मैं तो आप ही को खोजता फिरता था। मेरी बुद्धि पर परदा पड़ गया, आपको ही पीट ड़ाला। मुझे क्या पता था कि आप ही दादू भगत हैं। आप तो सड़क साफ कर रहे थे।

दादू मुस्कुराते हुए बोले – मैं सड़क ही तो साफ करता हूं। आत्म दर्शन को जाने वाली सड़क बिल्कुल सीधी है। इस पर जब काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की कॅटीली झाड़ें उग आती हैं, तब लोगों के लिए चलना कठिन हो जाता है। बहुत अधिक झाड़ें उग जायँ तो मार्ग लुप्त हो जाता है। वह आध्यात्मिक संसार की बात है, यह भौतिक संसार की। इस सड़क पर झाड़–झंखाड़ बहुत हैं। उन्हें दूर कर रहा हूं, जिससे यात्रियों को कष्ट न हों।

कोतवाल ने दुःख के साथ कहा – परन्तु मैं जब आपसे पूछता रहा, तो आपने बताया क्यों नहीं कि आप ही दादू भगत हैं ? मुझे क्षमा कर दीजिए, मुझसे बहुत बड़ा पाप हो गया है।

दादू जोर से हंस पड़े, बोले – कुछ नहीं किया तुमने। एक व्यक्ति एक घड़ा खरीदता है तो उसे भी ठोक–पीटकर देख लेता है। तुम तो जीवन का मार्ग दिखाने वाले गुरू को खोज रहे थे। ठोक–पीटकर देख लिया तो हर्ज ही क्या हुआ ?

यह है गुरू का गुण। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जिसे आप गुरू बनाना चाहते हैं उसे पीटना शुरू कर दीजिये। ऐसा नहीं, उसके पास बैठकर यह देखिये कि उसे क्रोध आता है या नहीं। यदि क्रोध नहीं आता तो ठीक व्यक्ति है। उसे गुरू बनाओं, परन्तु होश से बनाओ, देख–भालकर बनाओ। (क्रोध न करना, धर्म का लक्षण है)

जन विश्वास का महत्व

सुप्रसिद्ध चीनी दार्शनिक कनफ्यूशियन से एक शिष्य ने प्रश्न किया – शासन प्रभावशाली किस प्रकार बनाया जा सकता है ?

दार्शनिक ने उत्तर दिया – पर्याप्त अन्न, अस्त्र–शस्त्र, जनता का विश्वास प्राप्त करके। शिष्य ने पुनः प्रश्न किया – यदि तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तो किसे छोड़े ?

अस्त्र–शस्त्र को दार्शनिक ने कहा। और यदि शेष दोनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तब।

कनफ्यूशियन गंभीर हो गए, फिर बोले, ऐसी स्थिति में भोजन का त्याग करें। परन्तु भोजन के अभाव में कुछ लोग मरेगें।

शिष्य ने पूछा – यदि जनता का विश्वास त्याग दें तो कैसा रहे ?

दार्शनिक ने एक क्षण सोचे बिना उत्तर दिया, ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जाएगा। कोई भी शासन, भोजन और अस्त्र–शस्त्र के अभाव में चल सकता है कुछ दिंन, परन्तु जन विश्वास के समाप्त होने पर एक पल भी शासन नहीं टिक सकता।

इसलिए जनविश्वास सर्वोपरि है, जनविश्वास शासन की आत्मा है।

(ज्योतिपथ – सत्पसद आर्य)

ईश्वर अद्‌भुत कलाकार है

— ओम कुमार आय

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी महर्षि के समकालीन वे वैदिक विद्वान थे जिन्होंने अपनी असाधारण विद्वता के बलबूते योरोपीय विद्वानों को वेद–विषयक भ्रामक धारणाओं, मान्यताओं और व्याख्याओं का न केवल सटीक खण्डन ही किया अपितु उन्हें यह मानने पर विवश कर दिया कि वेदार्थ की अपनी एक अलग पद्धति है जो पाणीनीय 'अष्टाध्यायी' आचार्य वास्क कृत 'रिरूक्त' 'निधण्टु' आदि पर आधारित है। वैदिक संस्कृत 'तत्सम' संस्कृत है तथा लौकिक संस्कृत तद्‌भव है। 'तद्‌भव' की व्याकरण अलग है, 'तत्सम' की अलग है। पं. गुरूदत्त ने अपनी पुस्तिका 'वैदिक शब्दावली' में नमूने के तौर पर दो–तीन मन्त्रों के अर्थ विशुद्ध वैदिक पद्धति से किये हैं और साथ में मोनियर विलियम्स, मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों के किए हुए अनुवाद भी उद्धत किये हैं और तुलना करके दर्शाया है कि किस प्रकार इन पाश्चात्य विद्वानों ने कहीं जानबूझकर और अधिकतर अपनी नासमझी से अर्थ का अनर्थ करके वैदिक वांगमय के साथ घोर अन्याय किया है।

पं. गुरूदत्त द्वारा किये गये ऋग्वेद के मन्त्र के अनुवाद पर प्रकाश डालने से पूर्व जहां यह स्पष्ट करना भी नितांत समीचीन है कि उन्होंने बड़े विस्तारपूर्वक वेदार्थ करने संबंधी उन अत्यन्त त्रुटिपूर्ण अवैदिक पद्धतियों की प्रमाण सहित आलोचना करके उनकी निरर्थकता सिद्ध की है जो कि भूतकाल में सायण, महीधर, उव्वट आदि भाष्यकारों द्वारा प्रयुक्त की गई थी और उन्नीसवीं सदी के उक्त विद्वान भी उसी का अनुसरण कर रहे थे। यहां यह बताना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि पं. गुरूदत्त ने वेदार्थ संबंधी त्रुटिपूर्ण पद्धतियां को 3 वर्गों में बांटा है – 1. पौराणिक 2. ऐतिहासिक 3. समकालीन

और इन तीनों को ही वेदार्थ के विषय में अत्यन्त दोषपूर्ण, अपर्याप्त एवं अनुपयुक्त सिद्ध किया है। फिर कुछ वेदमन्त्रों का संक्षेप्तः भाष्य करके सही वेदार्थ का उदाहरण प्रस्तुत किया है जिनमें अग्रलिखित मन्त्र एक है –

ओ3म् तरणिर्विश्वदर्शतो ज्यातिष्कृदसि सूर्य।
विश्वमाभासि रोचनम्।। ऋ 1/50/4

और इस मन्त्र के आधार पर बहुत ही रोचक एवं सरस शैली से बताया है कि परमपिता परमेश्वर जो सृष्टि का कर्ता, धर्ता एवं संहर्ता है, एक कुशल चित्रेरा है, अद्‌भुत कलाकार है जिसकी सारी रचना विस्मयकारी रूप में विविध्तापूर्ण, बहुरंगी, अत्यन्त आकर्षक एवं बेजोड़ है। उसकी कारीगरी बेमिसाल है। किन्तु पं. गुरूदत्त के अर्थ से पहले आओ उस अर्थ को भी देख लें जो मोनियर विलियम्स ने किया है और पण्डित ज़ी ने अपनी पुस्तिका में उसको उद्धत किया है, उसका अर्थ इस प्रकार है –

'हम मरणधर्मा मनुष्यों की पहुंच से परे, तुम हे सूर्य देव, अपने यात्रापथ पर

सतत् अग्रसर रहते हो, एकदम कांतिमान दृश्यमान्। तुम प्रकाश के स्त्रोत हो और अपने प्रकाश से सारी सृष्टि को प्रकाशित करते हो।

– मोनियर विलियम्स

उक्त अर्थ से स्पष्ट है कि एम विलियम्स ने सूर्य शब्द का प्रचलित शब्दकोषीय (रूढ़) अर्थ लिया है और उसी की गति, कार्य आदि का वर्णन किया है जो कि मन्त्र का एकदम सतही अर्थ है और वास्तविक अर्थ से कोसों दूर है। पं. गुरूदत्त ने वेदार्थ की शास्त्रोक्त पद्धति का अनुसरण करते हुये शब्दों के 'यौगिक' धातुपरक एवं योगरूढ़ि अर्थ करते हुये तरणि और सूर्य को भौतिक सूर्य मात्र नहीं कहा जो अपने सौर मण्डल का अधिपति है और उसे आलोकित करता है किन्तु सूर्य को यहां परमपिता परमेश्वर का वाचक माना है। जो अपनी अनन्त सामर्थ्य और रचना शक्ति से अनन्त प्रकार की आकृतियों, विविधतापूर्ण बहुरंगी दृश्यों का सृजन करता है।

वह परमेश्वर निरालस त्वरागति से अपने नियमों के अन्तर्गत अपने करणीय क्रियाकलाप करता रहता है और उसके कार्य हम प्राणियों की पहुंच और पकड़ से परे हैं। आगे वे कहते हैं कि रंग, रूप भौतिक पदार्थों के अंतर्निहित गुण नहीं है किन्तु सूर्य की उपस्थिति से उनके अलग–अलग रूप रंग व्यक्त होते हैं। घोर अंधकार सब रंग, रूप हर लेता है, काला, पीला, नीला, लाल, सफेद आदि सब एक समान हैं घोर अन्धकार में। किन्तु सूर्य के प्रकट होते ही वे सब अपनी अलग–अलग छटा, छवि, आकृति, रंग, रूप प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसा वे स्वयं नहीं कर रहे, सूर्य का सहारा पाकर कर रहे हैं।

वे बतलाते हैं कि उक्त मन्त्र भी परमेश्वर की इसी प्रगटन, प्रकाशन, सर्जन एवं चित्रण शक्ति ओर इंगित कर रहा है। वे तो यह संकेत भी करते हैं कि वह परमात्मा रूपी सूर्य अपनी अथाह एवं असीम ज्ञान–राशि रूप प्रकाश की किरणें प्राणिमात्र के लाभ और भले के लिये सतत् सब ओर बिखेरता रहता है। उन्हीं के शब्दों में वह विलक्षण आभायुक्त सूर्य (परमेश्वर) कभी भी अस्त न होता हुआ (विश्व दर्शतः) प्राणिमात्र के हितार्थ कार्यरत् है, सारे ब्रह्माण्ड को प्रकाश पूरित कर रहा है और इसे मोहक आकार, प्रकार, विविध रंग रूप प्रदान कर रहा है। (ज्योतिष्कृद्) उस न अस्त होने वाले परमेश्वर की अनन्त आभा से (सूर्य आभासी) यह ब्रह्माण्ड दिव्य आभा से युक्त हैऔर अवर्णनीय रमणीयता एवं आकर्षण से युक्त है। मन्त्र के भाव को और स्पष्ट करते हुए अत्यन्त भाव विभोर होकर आस्तिक पं. गुरूदत्त कहते हैं कि उस कुशल सृष्टा, रचयिता, कालाकार, अनुपम चितेरे की महिमा देखो कि इधर अथाह समुद्र हिलोरे मार रहा है, उधर तपता रेगिस्तान दूर–दूर तक फैला हुआ है, इधर विशाल, उच्चश्रृंगों वाली पर्वतमाला है, उधर पाताल तक गये हुये डरावने खड्ड हैं, इधर नदियों की कल–कल, उधर पक्षियों की मनमोहक चहक, इधर धरती पर विविध नजारे उधर तारों सजा अनन्त रहस्य समेटे नील गगन आदि।

ये सब उस दिव्य कारीगर की दिव्य कारीगरी, दिव्य मनोहारी नमूने हैं। इन्हीं को देखकर आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के अत्यन्त आस्थावान् हरियाणवी लोकगायक दादा बस्तीराम के कण्ठ से भी सहसा फूट पड़ा था –?

'धन, धन है तेरी कारीगरी करतार' और समीक्षकों को इंग्लिश महाकवि जी चॉसर के काव्य में गजब की विविधता देखकर ईश्वरीय रचना की विविधता याद आई और बोल उठे –

चॉसर के काव्य में ''ईश्वर की सृष्टि की विविधता'' की झलक मिलती है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि महान वैदिक विद्वान एवं गवेषक पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने उक्त मन्त्र का शास्त्र–सम्मत विधि से अर्थ करते हुए ईश्वर की अप्रतिम रचना शक्ति अनुपम रचना कौशल, मनमोहक कारीगरी, आकर्षक कला एवं मंत्र मुग्ध कर देने वाली मनोरम चित्रण शक्ति का बोध करवाया है। वास्तव में ही ईश्वर अद्भुत कलाकार है, कवि है और जो सौभाग्यशाली व्यक्ति पूर्ण आस्थाभाव से उसके दोनों काव्यों दृश्य काव्य (संसार) श्रव्य एवं पाठ्यकाव्य (वेद) को देखता पढ़ता है वह भी उस अमर कलाकार के संग से अजर, अमर हो जाता है, क्योंकि उसी दिव्य कलाकार ने वेद के माध्यम से अन्यत्र कहा है – देवस्य पश्य काव्यं, न ममार न जीर्यति।

हमें अपने ऋषियों, अपने पूर्व गामी आर्ष विद्वानों के साहित्य का अध्ययन करने की आदत डालनी चाहिये ताकि हम सही अर्थ को जान सकें, गलत को त्यागकर सही को जान सकें, गलत को त्यागकर सही को जीवन में धारण करें और वेदाध्ययन से जीवन में सुख की प्राप्ति कर सकें।

विदाई

शिक्षा प्राप्त करके तपस्वी दयानन्द ने गुरू दण्डीजी को लौंगों से भरी एक थाली भेंट की। पर दण्डी जी बोले, वत्स ! संसार में अज्ञान फैला हुआ है। देश मे वेद विद्या लुप्त हो रही है। इस बढ़ते हुए अन्धकार को चीरकर सत्य धर्म का, वेद का प्रकाश करो, यही हमारी गुरू दक्षिणा है।

गुरू से यह आशीर्वाद और नई प्रेरणा ले स्वामी दयानन्द विदा हुए। देश के कोने–कोने में घूमकर उन्होंने अज्ञान के घोर अन्धकार को दूर करने में अपने प्राणों का जिस प्रकार होम किया, संसार उसे भली भांति जानता है। ऐसा था दण्डीजी का प्रशिक्षण।

अन्त में सन् 1868 में 71 वर्ष की आयु में दण्डी स्वामी विरजानन्द महाराज ने इस भौतिक देह को छोड़ दिया। उनकी मृत्यु पर महर्षि दयानन्द ने आर्त स्वर में कहा था – आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।

यह है, दण्डीजी का आदर्श चरित्र, जिनका लोहा भारत ही नहीं, सारा संसार माना है।

विशेष –

आजकल प्रायः यह पाया जा रहा है हम अपनी व्यस्त दिनचर्या में बुरी तरह उलझ कर रह गये हैं। रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था पारीवारिक, सामाजिक समस्यायें निजी येष्णायें आदि–आदि हमारे जीवन की मुख्य धारा बन चुकी हैं।

इनसे व्यक्ति व्यस्त हो गया और स्वाध्याय करने का समय ही नहीं बच पाता। इसके आगे और सोचें तो अपने परिवार को भी ठीक से समय नहीं दे पाता। जबकि व्यक्ति परिवार में विशेषकर हमारे वृद्धजनों और बच्चों को समय देना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बच्चों को अच्छे संस्कार, ज्ञानवर्द्धक शिक्षा से प्राप्त होते हैं, यह शिक्षा स्वाध्याय, सत्संग, माता–पिता के सम्पर्क से प्राप्त होती है।

संस्कारित बालक ही परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी और लाभकारी हो सकता है।

इसी भावना से हमारे बच्चों के लिए महर्षि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर सरल, ज्ञानवर्धक, रूचिकर प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की योजना बनाई है। जिन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देना है, उससे संबंधित पुस्तक विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जावेगी। उस पुस्तक में से ही प्रश्नों के उत्तर लिखना है।

पुस्तक और प्रश्न पत्र एक साथ विद्यार्थी को भेज दी जावेगी।

पुस्तक व प्रश्न प्राप्ति होने के 3 माह में विद्यार्थी को अपने उत्तर निम्न पते पर भेजना होगें। भेजे गए उत्तर की एक फोटोकॉपी (छायाप्रति) विद्यार्थी अपने पास रखे।

जिन विद्यार्थियों के सर्वाधिक उत्तर सही पाये जावेगें उन्हें तथा 50 प्रतिशत सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों को सभा द्वारा प्रमाण पत्र एवं प्रोत्साहन स्वरूप भेंट प्रदान की जावेगी।

इस प्रक्रिया में मात्र 50 प्रतिशत को पुस्तक तथा डाक, व्यय आदि हेतु भेजना होगें।

इस प्रतियोगिता में 18 वर्ष तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगें।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

समाचार

आर्ष कन्या गुरूकुल बड़ोदिया का निर्माण कार्य प्रगति पर

"सर्वदानानाम् विद्या दान विशिष्यते"

मान्यवर,

सादर नमस्ते,

वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार, सुरक्षा का आधार हमारे गुरूकुल हैं। सनातन संस्कृति की रक्षा और उस पर होने वाले प्रहारों को किसी ने परास्त किया तो वह गुरूकुल ही रहे हैं। गुरूकुल से शिक्षा प्राप्त विद्वानों ने ही शास्त्रार्थ में अपना परचम पहराया और सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति का मान बढ़ाया।

प्रत्येक सम्प्रदाय में उनके मजहबों की शिक्षा देने के अनेक स्थान संचालित किए जा रहे हैं। उनमें वह शिक्षा उन्हें दी जाती है जिससे उनके मजहब के प्रति उनमें कट्टरता आवे और वे उसका विस्तार करें। परिणाम हम देख रहे हैं, वे उसमें सफल भी हो रहे हैं।

सनातन विचारधारा की रक्षा का एकमात्र स्थान गुरूकुल हैं, जहॉ सनातन के मूल स्त्रोत का गहन अध्ययन करवाने, सनातन संस्कृति के संस्कारों से संस्कारित करने की व्यवस्था होती है।

इसी भावना से सनातन संस्कृति के अनुसार शिक्षण व्यवस्था हेतु बड़ोदिया जिला शाजापुर में आर्ष कन्या गुरूकुल की स्थापना की जा रही है।

मोहन बड़ोदिया, जिला शाजापुर में कन्या गुरूकुल प्रारंभ करने की योजना विगत 8 वर्ष पूर्व बनी थी। तबसे ही इस हेतु प्रयास प्रारंभ कर दिए गए थे, दानदाताओं से दान में प्राप्त राशि से अभी तक उसमें 72 बाय 36 वर्ग फुट भूमि पर निर्माण कार्य प्रारंभ किया था। पूर्व में यह निर्माण कार्य श्री दलवीरसिंहजी राघव के विशेष प्रयास से प्रारंभ हुआ। उसमें दो कक्ष बन चुके थे। उसके पश्चात पुनः दिनांक 9/4/2019 को उज्जैन और इन्दौर संभाग के लगभग 50 कार्यकर्ता एकत्रित हुए थे और वहां पर सभी ने अपना तन–मन–धन से सहयोग देने की घोषणा की।

इसमें सबसे बड़ा योगदान दिवंगत श्री किशोरीलाल जी गोयल की स्मृति में उनके पुत्र श्री विजयप्रकाश गोयल द्वारा 8,28,000 रूपयों का दान दिया, 51,000 रू. श्री शिवसिंहजी आर्य की ओर से चैनसिंग आर्य द्वारा घोषणा की, 21,000 रू. श्वेतकेतु वैदिक, 11000 रू. ओमप्रकाश आर्य, 11000 रू. श्रीधर गोस्वामी, 11000 रू. अश्विनी शर्मा, 51000 रू. आर्य समाज, राऊ, 21,000 रू. श्री विजयप्रकाश गोयल ने पृथक से व्यक्तिगत सहायता का चैक, 21,000 रू. आर्य राधेश्याम बियाणी, 11,000 रू. श्रीमती पुष्पा ओमप्रकाश आर्य

द्वारा। इसके अतिरिक्त करीब 2 लाख रू. और एकत्रित करके देने की घोषणा की गई। गुरूकुल निर्माण कार्य तेजी से प्रारंभ हो चुका है। दानदाताओं से अधिक से अधिक सम्पर्क करके सहायता राशि प्राप्त की जा रही है। लगभग 35 से 40 लाख रूपए की और सहायता वांछित है, जिससे गुरूकुल का कार्य प्रारंभ हो जाएगा। प्रारंभिक स्थिति की पढ़ाई के साथ ही कक्षा 6 व 7 में अध्ययनरत् 25–30 कन्याओं को प्रवेश दिया जावेगा। गुरूकुल में मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड के अनुसार पढ़ाई की व्यवस्था भी रहेगी। ताकि कन्यायें इस स्कूलीय शिक्षा की परीक्षा भी दे सकेगी।

यह स्थान आगर शाजापुर मार्ग पर स्थित है, इस हेतु 3 बीघा भूमि उपलब्ध हो चुकी है, उस पर निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। प्रथम मंजिल के चार बड़े कक्षों का निर्माण हो चुका है। प्रथम मंजिल का कार्य चल रहा है, यज्ञशाला, भोजनालय, कार्यालय इन सबका निर्माण बहुत शीघ्रता से करना है। आचार्य, शिक्षिका, कर्मचारी निवास भी बनने हैं। माह जुलाई से इस गुरूकुल का शुभारंभ करने की पूरी योजना है।

गुरूकुल की योजना बनाने के पूर्व इसके व्यवस्थित व स्थाई संचालन के संबंध में विचार किया गया। पाणिनी महाविद्यालय बनारस की आचार्या चतुर्वेदा बहन नन्दिता जी शास्त्री ने इस हेतु आश्वस्त किया है, उनके मार्गदर्शन में यह गुरूकुल संचालित होगा।

समय कम है निर्माण कार्य और अन्य व्यवस्थायें करने में काफी तत्परता और धन की आवश्यकता लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आवश्यक है।

प्रदेश का पहला कन्या गुरूकुल प्रारंभ होने जा रहा है आशा से अधिक उत्साह क्षेत्र में है, यह हम सबके लिए सौभाग्य की बात है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कृपया इस सनातन धर्म के विद्या मन्दिर निर्माण व संचालन में अपनी पवित्र आहुति देकर कन्याओं को अपना आशीर्वाद प्रदान कर अनुग्रहीत करें।

विनीत

इन्द्रप्रकाश गाँधी	**दलवीरसिंह राघव**	**प्रकाश आर्य**
प्रधान	अध्यक्ष	मन्त्री
म.भा.आ.प्र.सभा	प्रस्तावित–आर्ष गुरूकुल समिति	म.भा.आ.प्र.सभा

वेदप्रकाश आर्य	**अतुल वर्मा**
भू अधिष्ठाता – म.भा.आ.प्र.सभा	कोषाध्यक्ष– म.भा.आ.प्र.सभा
लक्ष्मीनारायण आर्य	**दरबारसिंह आर्य**
उपप्रधान–उज्जैन संभाग	उपमन्त्री–उज्जैन संभाग
गोविन्दराम आर्य	**डॉ. दक्षदेव गौड़**
उपप्रधान–इन्दौर संभाग	उपमन्त्री –इन्दौर संभाग
श्री परमालसिंहजी कुशवाह	**श्री जैमिनीजी गोयल**
उपप्रधान – ग्वालियर संभाग	उपमन्त्री – ग्वालियर संभाग
श्री मानसिंगजी यादव	**आचार्य घनश्यामजी**
उपप्रधान – चंबल संभाग	उपमन्त्री – चम्बल संभाग
श्री बंशीलालजी आर्य	**श्री राजेन्द्रबाबू जी गुप्ता**
उपप्रधान – रतलाम संभाग	उपमन्त्री – रतलाम संभाग
श्री श्रीधरजी शर्मा	**श्री रामवीरजी शर्मा**
उपप्रधान – गुना संभाग	उपमन्त्री – गुना संभाग
श्री दिनेश जी वाजपेयी	**श्री ओमप्रकाश आर्य** एडवोकेट
उपप्रधान – भोपाल संभाग	उपमन्त्री – भोपाल संभाग

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है. ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना■सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए, सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062